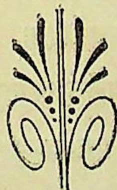


शुद्धि-सम्मेलन

भाषण



—महाराज

कुमार उमेदसिंह.

* ओ३म् *

महाराज कुमार श्री उमेदसिंह जी का
गुरुकुल के २६ वें वार्षिकोत्सव पर
शुद्धि सम्मेलन
में
भाषण

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अपघ्नन्तो ऽराव्णः ॥ ऋग्वेद ॥

ओम् आसंयत मिन्द्रणः स्वस्ति शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्नाम्।

यथादासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रि-सुतुक नाहुषाणि। अथर्व ॥

मान्य सभापति जी तथा आर्य सज्जनगण,

वेद भगवान् के इन दो मन्त्रों में ईश्वर मनुष्य को आज्ञा करता है कि वह उत्तम गुणों का प्रचार करके संसार को आर्य बनाने का यत्न करे। वेद उपदेश करता है कि मनुष्य मात्र को परमात्मा की सन्तान समझ कर, जीवन को कर्मशील बना कर, संसार में शान्ति और सन्तोष का राज्य स्थापित करने के लिए किसी भी देश व जाति के मनुष्य को आर्य बनाने में संकोच मत करो। वेद के अनुसार वैदिकधर्मावलम्बियों का कर्तव्य है कि परमात्मा ने उन्हें जो सच्चा ज्ञान दिया

28,036
12-5-60

है, उसका प्रचार देश और जाति के भेद भाव को भुला कर करो।

इसी वैदिक-आज्ञा के अनुसार प्राचीन समय से ऋषि मुनि अशिक्षित जङ्गली जातियों को आर्य-जाति का अङ्ग बनाने का यत्न करते आए हैं। प्राचीन-आर्यों के इस प्रकार के यत्न का वर्णन भविष्य-पुराण, प्रतिसर्गवर्ग, खण्ड ३ य, अध्याय ४ र्थ में इस प्रकार किया है।

अग्निवंशस्य विस्तारो बभूव बलवत्तरः।
द्वापराख्य समः कालः सर्वत्र परिवर्तते॥
गेहे गेहे स्थितं द्रव्यं धर्मश्चैव जने जने।
आर्यधर्मपराम्लेच्छा बभूवुः सर्वतो मुखाः॥

अग्नि-वंश का विस्तार द्वापर युग में हुआ। प्रजा धन-सम्पन्न तथा धर्मपरायण थी। अनेकों म्लेच्छों ने आर्य-धर्म को स्वीकार किया।

इसी के आगे वर्णन आता है:—

कलिरुवाच—

मत्पुत्राश्च स्मृता म्लेच्छा आर्यधर्मत्वमागताः।

मेरे म्लेच्छ पुत्रों ने आर्य-धर्म को स्वीकार किया।

म्लेच्छ कौन थे:— इसके लिए मनुस्मृति का यह श्लोक हरेक को याद रखना चाहिए।

शनकैस्तु क्रियालोपद्द्विजाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणानामदर्शनात् ॥

अर्थात् आर्यों के सदाचार को छोड़ने वाले ही दस्यु, दास या म्लेच्छ कहलाते थे। इन की शुद्धि का अभिप्राय यही है कि उन्हें फिर से आर्य-जाति का अंग बनाया जाय, उनके आचार को आर्य-धर्म के अनुसार ढाला जाय।

इतना ही नहीं यदि हम ब्राह्मणों का अध्ययन करें तो वहाँ व्रात्य स्तोम विधि का वर्णन पाते है। 'सावित्रीपतिताः व्रात्याः' व्रात्य उन्हें कहते थे जो गायत्री मन्त्र या विद्या का अध्ययन छोड़ देते थे। सामवेद के ताण्ड्य-ब्राह्मण में ऐसे व्रात्यों को फिर से आर्य बनाने की विधि का वर्णन किया है।

१८९९ ईस्वी में राजाराम शास्त्री भागवत ने इसी विषय पर एक लेख १२ पृष्ठ का लिख कर प्रकाशित किया था। इस लेख में सामवेद के १७ वें अध्याय के ताण्ड्य-ब्राह्मण-सूत्र, लाट्यायन सूत्र के व्रात्यस्तोम संस्कार के मन्त्र देकर लेख को इन पंक्तियों के साथ समाप्त किया था:—

"यदि हम उन आर्यों के सच्चे वंशज हैं तो हमें सारे संसार को वैदिक-धर्म का अनुयायी बनाने का यत्न करना चाहिए। वैदिक-साहित्य के आपस्तम्ब श्रौतसूत्र, कात्यायन वाजसनीय संहिता, तैत्तिरीय ब्राह्मण, अथर्ववेद काण्ड १५ वाँ, आदि में अनेक स्थानों पर इसी प्रकार के भावों का उल्लेख किया गया है

परन्तु बहुत देर से आर्य-जाति इन सचाईयों को भूल चुकी थी। वर्तमान समय में वैदिक-सभ्यता तथा वैदिक-साहित्य के पुनरुद्धारक ऋषि दयानन्द ने इन विचारों का प्रचार किया। आज का शुद्धि आन्दोलन ऋषि दयानन्द के इन्हीं विचारों का परिणाम है। शुद्धि आन्दोलन का भाव यह है कि हम सब मनुष्यमात्र में आर्य-सभ्यता के भावों तथा आर्य-संस्कारों का प्रचार करना चाहते हैं। आर्य-सभ्यता के प्रवर्तकों का भाव यह था कि जिस सिद्धान्त को हम अच्छा समझते हैं, उसका अधिक से अधिक प्रचार किया जाय। अधिक से अधिक मात्रा में संसार में आर्य पुरुषों की संख्या बढ़ाई जाय। यह शुद्धि आन्दोलन केवल हिन्दू-जाति तक ही सीमित नहीं है। ईसाई मुसलमान सब सम्प्रदायों को हम इस शुद्धि में निमन्त्रण देते हैं। केवल भारतवर्ष में ही नहीं संसार के प्रत्येक देश में हम आर्य-सभ्यता का प्रचार करना चाहते हैं। जिस प्रकार प्राचीन समय में कण्व ऋषि ने मिश्र में जाकर १०००० म्लेच्छों को आर्य बनाया था अर्थात् उन में आर्य-संस्कारों तथा आर्य सभ्यता के विचारों को फैलाया था, उसी प्रकार हम चाहते हैं कि यह शुद्धि आन्दोलन देश देशान्तर तथा द्वीप द्वीपान्तरों की सीमाएँ लाँघ कर, सब जगह फैले। इस शुद्धि आन्दोलन का उद्देश्य सांसारिक या राजनैतिक नहीं है। इस का उद्देश्य यह है कि मनुष्य मात्र को आत्मप्रधान आर्य-सभ्यता की शीतल छत्रछाया में निमन्त्रित किया जाय।"

शुद्धि आन्दोलन की दूसरी विशेषता जिसकी तरफ़ हमें विशेष ध्यान देना चाहिए, वह यह है कि हमें मतभेद या विचार-भेद के कारण सदा के लिए किसी से द्वेष नहीं करना चाहिए। यह समझना कि जो आज मुसलमान हो गया है फिर आर्य नहीं बन सकता या जो व्यक्ति आज किसी धर्म को मानता है दूसरे धर्म में प्रवेश नहीं कर सकता, ठीक नहीं है। शुद्धि आन्दोलन का आधार विचारस्वातन्त्र्य है। भिन्न-भिन्न संप्रदायों तथा मत-मतान्तरों के बीच में जो अभेद्य दीवार खड़ी हो गई है, उसको दूर करना भी शुद्धि-आन्दोलन का उद्देश्य है।

यह विचार आज इस सदी के विशेष विचार नहीं हैं। हमें यह विचार नए इसलिए मालूम पड़ते हैं कि कई सदियों के बाद आज हमें इन विचारों को क्रियात्मक रूप देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है।

भारतवर्ष के प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास को पढ़िए। समय-समय पर हमारे पूर्वजों ने इन विचारों को क्रियात्मक-रूप दिया था।

यूची, हूण, शक—इन सब जातियों को आर्य-जाति का अंग बनाया गया। रुद्रदामन, कनिष्क आदि विदेशी राजाओं को वैदिक-संस्कारों के प्रभाव से आर्य बनाया था।

श्री. देवदत्त भाण्डारकर ने ग्वालियर के भिलसा शहर के नज़दीक के सनभर नाम के गाँव में गड़े हुए शिलालेख के सम्बन्ध में लिखा है:—

"मध्यदेश में यूनानी ग्रीक का सोमपुत्र भागवत आया। इसने भागवत-धर्म को स्वीकार किया। इस धर्म-स्वीकृति की स्मृति में गरुड़ध्वज की स्थापना की।"

इससे स्पष्ट है कि अनुदार विचारोंवाले पौराणिक भी समय-समय पर विधर्मियों को आश्रय देते रहे हैं।

प्रश्न यह है कि यदि प्राचीन समय में इस प्रकार की विचार-पद्धति विद्यमान थी तो मध्यकाल में यह प्रथा क्योंकर लुप्त हो गई।

इसके दो कारण हैं:—प्रथम हमारे पूर्वजों ने वर्णव्यवस्था को जन्ममूलक मानना शुरू किया। अर्थात् शूद्र आदि को उन्नति का मौका नहीं दिया गया। परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण और क्षत्रिय बिना यत्न के प्रतिष्ठा पाने लगे। उन्हें बाहर जाने की आवश्यकता न रही। अर्थात् जाति के शरीर में रूढ़िवाद की लहर चल गई। इसने सारी जाति की मनोवृत्ति को बदल दिया। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि वास्तव में शुद्धि-आन्दोलन सर्वत्र फैले तो हमें—वर्णव्यवस्था को जन्म और जातियों के बन्धन से मुक्तकर कर्मानुसार मानना चाहिए।

दूसरा कारण मुसलमानों तथा ईसाईयों का आर्यजाति की इस मनोवृत्ति का दुरुपयोग करना था। इन विधर्मियों ने यह गुर समझ लिया था कि जिसे हम छू देंगे वह भ्रष्ट हो जायगा। यदि उस समय आर्य्यजाति इन विधर्मियों को

भी अपनी व्यापक वर्णव्यवस्था का अंग बना लेती तो हमें आज शुद्धि आन्दोलन की विशेष आवश्यकता न होती।

परन्तु अब आर्य-जाति के सौभाग्य के दिन आ गए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती, पं० लेखराम जी तथा श्री. स्वामी श्रद्धानन्द जी के महाप्रयत्नों से यह आन्दोलन आर्य-जाति के हरेक सम्प्रदाय का प्यारा बन गया है। आर्य-समाज तो शुरू से ही विदेशियों तथा विधर्मियों को आर्य बनाने का पक्षपाती था। अब सनातनी और हिन्दू भाई भी अपने अपने विचारों के अनुसार इस तरफ़ आरहे हैं। हमें इस परिवर्तन पर अत्यन्त प्रसन्नता है। अब आर्य-जाति के हृदय में अपने विचारों को फैलाने की इच्छा पैदा की गई है।

परमात्मा करे कि यह फैलने की इच्छा दिन २ बलवती होती जाय और हम वैदिक आदेश के अनुसार संसार भर में आर्य-सभ्यता का प्रचार कर, मनुष्य मात्र को आर्य बनाएं। यही मेरी हार्दिक प्रार्थना परमपिता परमात्मा के चरणों में है।

परमात्मा हमें बल दे कि हम अपने आप को पवित्र करते हुए शुद्धि आन्दोलन के प्रचार में प्रवृत्त हों।

ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!



गुरुकुल-यन्त्रालय काँगड़ी में मुद्रित।

166